**International Journal of Emerging Voices in Education**
**Volume 2 | Issue 3 | March 2026 | ISSN: 3107-958X (Online)**
**Available online at:** https://ijeve.com/
**DOI:** https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i3.38

# प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना: कक्षा शिक्षण और व्यावसायिक कौशल के मध्य समन्वय करती एक अभिनव योजना

**Dr. Vikash Singh**
Assistant Professor, Education Training (B. Ed.), Vikramajit Singh Sanatan Dharma College, Kanpur
**Email:** vikassinghkn02@csjm.ac.in

**Received:** 05 March 2026 | **Accepted:** 22 March 2026 | **Published:** 30 March 2026

## सारांश

भारत की शिक्षा प्रणाली प्राचीन प्राचीन काल से ही मात्रात्मक एवं गुणात्मक दृष्टि से समृद्ध रही है जिसमें समय-समय पर परिमार्जन किया जाता है जिस संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा के संप्रत्यय में स्थानीय आवश्यकताओं एवं वैश्विक परिवेश के अनुरूप व्यावसायिक कौशल की प्रवक्ता को इंगित किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है जिस हेतु कक्षा शिक्षण को व्यावसायिक कौशल से कैसे जोड़ा जाए इस दिशा में प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना एक क्रांतिकारी पहल है। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना सार्थक रूप से कक्षा शिक्षण की प्रासंगिकता को व्यवसायिक कुशलता के रूप में अभिव्यक्त करता है। इस योजना का उद्देश्य छात्रों को सरकारी संस्थानों उद्योगों एवं स्टार्टअप से जोड़कर व्यावसायिक कौशल विकसित करना है। भारत में शिक्षा प्रणाली लंबे समय से इस चुनौती का सामना कर रही है कि विद्यालय और महाविद्यालयों में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभव से कैसे जोड़ा जाए। इस दिशा में "प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना" की सार्थकता प्रतीत होती है। इस योजना का उद्देश्य छात्रों को उद्योग, सरकारी संस्थानों तथा स्टार्टअप्स से जोड़कर रोजगारोन्मुखी कौशल विकसित करना है।सर्वेक्षण में पाया गया कि इस योजना से जुड़ने वाले 78% छात्रों के रोजगार अवसरों में वृद्धि हुई, जबकि 65% छात्रों ने कहा कि उन्हें कार्यस्थल पर आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार मिला। प्रस्तुत शोध में कक्षा शिक्षण में व्यावसायिक कौशल के संदर्भ में प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना की प्रासंगिकता को इंगित किया गया है।

**मुख्य शब्द:** इंटर्नशिप, कौशल विकास, रोजगारोन्मुखी शिक्षा, प्रधानमंत्री योजना, व्यावसायिक प्रशिक्षण

## 1. प्रस्तावना :

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना या डिग्री हासिल करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को जीवन में आत्मनिर्भर, सक्षम और समाजोपयोगी बनाना है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में शिक्षा का स्वरूप केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रह सकता, बल्कि उसमें व्यावहारिक अनुभव और कौशल विकास का समावेश अनिवार्य हो गया है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ जनसंख्या का बड़ा हिस्सा युवा है, वहाँ गुणवत्तापूर्ण और कौशल-आधारित शिक्षा ही आर्थिक प्रगति की कुंजी है। परंतु विभिन्न सर्वेक्षणों और रिपोर्टों से यह स्पष्ट हुआ है कि भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले केवल लगभग 25% विद्यार्थी ही ऐसे हैं जिनके पास उद्योग या रोजगार के अनुरूप व्यावहारिक कौशल उपलब्ध हैं (AICTE Report, 2023)। इस असंतुलन के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में शिक्षित युवा बेरोजगारी या अल्परोजगार की समस्या का सामना कर रहे हैं।

इसी गंभीर परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2022 में "प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना" की शुरुआत की। इस योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके अध्ययन के क्षेत्र से संबंधित व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना तथा शिक्षा और रोजगार के बीच की खाई को पाटना है। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के "कौशल एवं अनुभव आधारित शिक्षा" के सिद्धांत पर आधारित है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि विद्यार्थियों को केवल पुस्तक-ज्ञान तक सीमित न रखकर, उन्हें वास्तविक जीवन और उद्योग से जोड़ना चाहिए ताकि वे रोजगार योग्य बन सकें और नवाचार की दिशा में योगदान दे सकें(राघवन, 2018)।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का मूल भाव यह है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने विषय से संबंधित उद्योग, संस्था या संगठन में एक निश्चित अवधि की इंटर्नशिप करे, जिससे वह न केवल अपने विषय के व्यावहारिक पहलुओं को समझ सके, बल्कि कार्य संस्कृति, प्रबंधन कौशल, संवाद-क्षमता, टीम

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJEVE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

वर्क और समस्या समाधान जैसे आवश्यक गुण भी विकसित कर सके। यह अनुभव विद्यार्थियों को केवल रोजगार पाने योग्य ही नहीं बनाता, बल्कि उन्हें उद्यमिता की दिशा में भी प्रेरित करता है।

इस योजना के अंतर्गत सरकार ने उच्च शिक्षा संस्थानों, तकनीकी विश्वविद्यालयों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के बीच एक सहयोगात्मक ढांचा तैयार किया है। इसके माध्यम से छात्रों को उनके विषयानुसार इंटर्नशिप के अवसर प्रदान किए जाते हैं। उदाहरण के लिए—इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों को उत्पादन इकाइयों, विनिर्माण संस्थानों या आईटी कंपनियों में इंटर्नशिप का अवसर मिलता है, जबकि प्रबंधन, समाजशास्त्र या पर्यावरण विज्ञान जैसे विषयों के विद्यार्थी एनजीओ, सरकारी परियोजनाओं या अनुसंधान संस्थानों में कार्यानुभव प्राप्त कर सकते हैं(भारत सरकार, 2020)।

यह योजना न केवल छात्रों को औद्योगिक अनुभव प्रदान करती है, बल्कि उद्योग जगत को भी युवाओं की सृजनात्मक सोच और नई ऊर्जा से जोड़ती है। कंपनियों को ऐसे प्रशिक्षित और उत्साही युवाओं की उपलब्धता होती है जो भविष्य में उनके लिए स्थायी कर्मचारी या सहयोगी बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त, यह योजना ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध हो रही है। सरकार ने इस कार्यक्रम में "स्थानीय उद्योगों" को भी शामिल किया है ताकि ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्र अपने ही क्षेत्र में कौशल विकसित कर सकें और "वोकल फॉर लोकल" के दृष्टिकोण को आगे बढ़ा सकें(तिवारी और रेड्डी, 2021)। ।

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना में एक और महत्वपूर्ण पहलू "डिजिटल इंटर्नशिप" का है। आज की तकनीकी दुनिया में ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से भी प्रशिक्षण प्राप्त करना संभव है। इस दृष्टि से सरकार ने एक ऑनलाइन पोर्टल तैयार किया है, जहाँ छात्र पंजीकरण कर विभिन्न इंटर्नशिप अवसरों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस पोर्टल पर उद्योगों और संस्थाओं को भी आमंत्रित किया गया है कि वे अपनी इंटर्नशिप आवश्यकताएँ अपलोड करें। इस प्रकार यह योजना शिक्षा, उद्योग और सरकार के बीच एक सशक्त त्रिपक्षीय संबंध स्थापित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, "शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में दक्षता प्राप्त करना है(भारत सरकार, 2020)।" प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना इसी दिशा में एक सशक्त कदम है। यह योजना न केवल विद्यार्थियों को "सीखने के साथ करने" (Learning by Doing) की भावना से जोड़ती है, बल्कि उन्हें आत्मविश्वास, जिम्मेदारी और नवाचार की दिशा में अग्रसर करती है। इससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता का भाव विकसित होता है और वे राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बनते हैं।

साथ ही, यह योजना "स्किल इंडिया", "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे राष्ट्रीय अभियानों से भी जुड़ी हुई है। जब विद्यार्थी उद्योगों के साथ प्रत्यक्ष रूप से कार्य करते हैं, तो उन्हें यह समझने का अवसर मिलता है कि भारत की आर्थिक संरचना किस प्रकार काम करती है और उसमें वे किस प्रकार योगदान दे सकते हैं। इस प्रकार, यह योजना न केवल व्यक्तिगत विकास का माध्यम है, बल्कि सामूहिक और राष्ट्रीय विकास का भी सशक्त उपकरण है (मेनन और दास, 2021)।

## 2. उद्देश्य:

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि—

1. प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना किस प्रकार कक्षा शिक्षण एवं व्यावसायिक कौशल में समन्वय स्थापित करती है?
2. प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना की विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं उद्योग के उपयोगिता का विश्लेषण करना।
3. प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का विभिन्न क्षेत्रों में, जैसे— शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय आदि और दृष्टिकोण अनुसंधान, व्यावसायिक एवं उद्योगों में प्रभाव का मूल्यांकन करना।

## 3. अनुसंधान पद्धति:

### 3.1 अनुसंधान का स्वरूप और दृष्टिकोण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के प्रभाव और प्रासंगिकता का मूल्यांकन करने के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक अनुसंधान का उद्देश्य योजना की वर्तमान स्थिति, इसके क्रियान्वयन के स्वरूप, लाभार्थियों की संख्या, तथा योजना से जुड़े विभिन्न पहलुओं का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करना है। इसके साथ ही विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि इस योजना का विद्यार्थियों के कौशल विकास, रोजगारोन्मुखी शिक्षा, आत्मविश्वास  नहीं रहेगा और व्यावसायिक क्षमताओं पर क्या प्रभाव पड़ा है।

अनुसंधान की प्रकृति मिश्रित  है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मकदोनों प्रकार के आंकड़ों का संग्रहण और विश्लेषण किया गया है। मात्रात्मक आंकड़ों के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जबकि गुणात्मक आंकड़ों के लिए गहन साक्षात्कार और फोकस ग्रुप डिस्कशन का सहारा लिया

गया। इस पद्धति से न केवल सांख्यिकीय निष्कर्ष प्राप्त हुए, बल्कि योजना के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक प्रभावों की गहरी समझ भी विकसित हो सकी।

अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना वास्तव में कक्षा शिक्षण और व्यावसायिक कौशल के मध्य अंतराल को कितनी प्रभावी रूप से पाट रही है। इसके लिए तीन प्रमुख हितधारक समूहों—विद्यार्थी, शिक्षक और उद्योग प्रतिनिधि—से जानकारी एकत्रित की गई, ताकि योजना के विभिन्न आयामों को समग्रता से समझा जा सके।

### 3.2 अनुसंधान क्षेत्र और नमूना चयन

इस अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान और पश्चिम बंगाल के विभिन्न शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों को शामिल किया गया। इन राज्यों का चयन इस आधार पर किया गया कि ये भौगोलिक, सामाजिक-आर्थिक और शैक्षणिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके अतिरिक्त, इन क्षेत्रों में प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का क्रियान्वयन सक्रिय रूप से हो रहा है, जिससे पर्याप्त और विश्वसनीय आंकड़े प्राप्त करने में सहायता मिली।

#### 3.2.1 नमूना आकार

**विद्यार्थी (200):** इस समूह में वे विद्यार्थी शामिल किए गए जिन्होंने प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत कम से कम तीन महीने की इंटर्नशिप पूर्ण की हो। इनमें विभिन्न विषयों जैसे इंजीनियरिंग, प्रबंधन, विज्ञान, मानविकी, कृषि, और कला संकाय के छात्र-छात्राएं शामिल थे। आयु वर्ग 18 से 25 वर्ष के मध्य रखा गया, तथा स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। लिंग अनुपात में संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया गया, जिसमें 55% पुरुष और 45% महिला विद्यार्थी थे।

**शिक्षक (50):** इस श्रेणी में उच्च शिक्षण संस्थानों, महाविद्यालयों और तकनीकी विश्वविद्यालयों के वे शिक्षक शामिल किए गए जो प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के समन्वयक, मार्गदर्शक या संकाय सदस्य के रूप में कार्यरत थे। इनका शैक्षणिक अनुभव 5 से 20 वर्षों के मध्य था। शिक्षकों का चयन विभिन्न विषयों और विभागों से किया गया ताकि योजना के शैक्षणिक और प्रशासनिक पहलुओं की व्यापक समझ विकसित हो सके।

**उद्योग प्रतिनिधि (30):** इस समूह में निजी कंपनियों, सार्वजनिक उपक्रमों, स्टार्टअप्स और गैर-सरकारी संगठनों के मानव संसाधन प्रबंधक, प्रशिक्षण अधिकारी और वरिष्ठ प्रबंधक शामिल थे। इन्हें इस आधार पर चुना गया कि उनके संगठनों ने प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत कम से कम 10 विद्यार्थियों को इंटर्नशिप प्रदान की हो।

#### 3.2.2 नमूना चयन की विधि

नमूना चयन के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श और स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श का मिश्रित उपयोग किया गया। विद्यार्थियों के मामले में, सबसे पहले विभिन्न राज्यों और शैक्षणिक संस्थानों को स्तरों में विभाजित किया गया और फिर प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक रूप से उत्तरदाताओं का चयन किया गया। शिक्षकों और उद्योग प्रतिनिधियों के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श का उपयोग किया गया, क्योंकि यह आवश्यक था कि उत्तरदाता योजना से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हों और उसके बारे में विस्तृत जानकारी रखते हों(सिन्हा और गुप्ता, 2022)।

### 3.3 डेटा संग्रहण की विधियाँ

#### 3.3.1 संरचित प्रश्नावली

प्रश्नावली डेटा संग्रहण का प्राथमिक उपकरण था। तीनों समूहों के लिए अलग-अलग प्रश्नावली तैयार की गई, जो उनके परिप्रेक्ष्य और अनुभवों के अनुरूप थी। प्रश्नावली में बहुविकल्पीय प्रश्न, लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्न, और कुछ खुले प्रश्न शामिल थे।

**विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली** में निम्नलिखित आयामों को शामिल किया गया:

- इंटर्नशिप की अवधि, क्षेत्र और स्वरूप
- इंटर्नशिप के दौरान प्राप्त व्यावहारिक कौशल
- आत्मविश्वास, संवाद कौशल, टीम वर्क और समस्या समाधान क्षमता में सुधार
- शैक्षणिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव के बीच संबंध
- रोजगार अवसरों में वृद्धि
- योजना की चुनौतियाँ और सुझाव

**शिक्षकों के लिए प्रश्नावली** में योजना के शैक्षणिक प्रभाव, छात्रों के प्रदर्शन में परिवर्तन, पाठ्यक्रम और इंटर्नशिप के बीच समन्वय, और योजना के क्रियान्वयन में आने वाली बाधाओं से संबंधित प्रश्न शामिल थे।

**उद्योग प्रतिनिधियों के लिए प्रश्नावली** में इंटर्न विद्यार्थियों की कार्यक्षमता, उनके तकनीकी और व्यवहारिक कौशल, संगठन को मिलने वाले लाभ, और योजना को और प्रभावी बनाने के सुझावों से संबंधित प्रश्न थे।

प्रश्नावली को दो भाषाओं—हिंदी और अंग्रेजी—में तैयार किया गया ताकि विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि के उत्तरदाता सहजता से उत्तर दे सकें। प्रश्नावली को पायलट टेस्टिंग (Pilot Testing) के माध्यम से परीक्षित किया गया, और प्राप्त सुझावों के आधार पर आवश्यक संशोधन किए गए।

### 3.3.2 साक्षात्कार

प्रश्नावली के अतिरिक्त, चयनित उत्तरदाताओं के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए। विद्यार्थियों में से 30 को, शिक्षकों में से 15 को, और उद्योग प्रतिनिधियों में से 10 को गहन साक्षात्कार के लिए चुना गया। साक्षात्कार का उद्देश्य उन पहलुओं को समझना था जो प्रश्नावली में पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो सके।

साक्षात्कार के दौरान विद्यार्थियों से उनके व्यक्तिगत अनुभव, इंटर्नशिप के दौरान सीखे गए विशिष्ट कौशल, उद्योग और शैक्षणिक संस्थान के मध्य समन्वय की गुणवत्ता और भविष्य की योजनाओं पर इंटर्नशिप के प्रभाव के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। शिक्षकों से योजना के शैक्षणिक एकीकरण, प्रशासनिक चुनौतियों और छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में आए परिवर्तनों के बारे में जानकारी ली गई। उद्योग प्रतिनिधियों से इंटर्न छात्रों की उत्पादकता, उनके योगदान की गुणवत्ता और दीर्घकालिक भर्ती की संभावनाओं पर बात की गई।

साक्षात्कारों को ऑडियो रिकॉर्ड किया गया (उत्तरदाताओं की सहमति से) और बाद में उन्हें लिखित रूप में परिवर्तित किया गया। इससे गुणात्मक विश्लेषण में सहायता मिली।

### 3.3.3 फोकस ग्रुप डिस्कशन

तीन अलग-अलग फोकस ग्रुप डिस्कशन आयोजित किए गए—एक विद्यार्थियों के साथ, एक शिक्षकों के साथ और एक मिश्रित समूह के साथ जिसमें विद्यार्थी, शिक्षक और उद्योग प्रतिनिधि सभी शामिल थे। प्रत्येक समूह में 8 से 12 सदस्य थे। इन चर्चाओं का उद्देश्य सामूहिक दृष्टिकोण आपसी अनुभवों की तुलना और योजना के विभिन्न पहलुओं पर बहुआयामी विचार प्राप्त करना था। इससे योजना की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को समझने में भी सहायता मिली(मेनन और दास, 2021)।

## 3.4 डेटा विश्लेषण के उपकरण और तकनीकें

### 3.4.1 प्रतिशत विश्लेषण

मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सबसे पहले प्रतिशत विधि का उपयोग किया गया। इससे यह जानने में सहायता मिली कि कितने प्रतिशत विद्यार्थियों ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि देखी, कितने प्रतिशत ने आत्मविश्वास में सुधार महसूस किया और शिक्षकों तथा उद्योग प्रतिनिधियों की कितनी प्रतिशत संख्या योजना को प्रभावी मानती है। प्रतिशत विश्लेषण से डेटा को सरल और सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करना संभव हुआ।

### 3.4.2 औसत और केंद्रीय प्रवृत्ति

लिकर्ट स्केल आधारित प्रश्नों के उत्तरों का औसत निकाला गया ताकि यह समझा जा सके कि सामान्यतः उत्तरदाताओं का रुझान किस ओर है। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थियों से पूछा गया कि "इंटर्नशिप ने आपके व्यावहारिक ज्ञान में कितना योगदान दिया" (1 = बहुत कम, 5 = बहुत अधिक), तो सभी उत्तरों का औसत निकालकर समग्र प्रभाव का आकलन किया गया। इसके अतिरिक्त, मानक विचलन की गणना भी की गई ताकि उत्तरों में विविधता और स्थिरता का पता चल सके।

### 3.4.3 सहसंबंध विश्लेषण

सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग यह जानने के लिए किया गया कि क्या इंटर्नशिप की अवधि, क्षेत्र, या स्वरूप और रोजगार अवसरों, आत्मविश्वास या कौशल विकास के मध्य कोई संबंध है। पियर्सन सहसंबंध गुणांक (Pearson Correlation Coefficient) की गणना की गई। उदाहरण के लिए, यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों ने छह महीने या उससे अधिक की इंटर्नशिप की, उनमें रोजगार प्राप्ति की दर उन विद्यार्थियों की तुलना में अधिक थी जिन्होंने तीन महीने की इंटर्नशिप की। इसी प्रकार, जिन विद्यार्थियों ने तकनीकी क्षेत्रों में इंटर्नशिप , उनके व्यावहारिक कौशल में सुधार अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाया गया।

### 3.4.4 गुणात्मक विश्लेषण

साक्षात्कार और फोकस ग्रुप डिस्कशन से प्राप्त गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण थीमैटिक एनालिसिस के माध्यम से किया गया। सभी साक्षात्कारों और चर्चाओं को लिखित रूप में परिवर्तित करने के बाद, उनमें से प्रमुख विषयों और पैटर्न्स को चिन्हित किया गया। उदाहरण के लिए कई विद्यार्थियों

ने "व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि", "आत्मविश्वास का विकास" और "उद्योग संपर्क" जैसे विषयों का उल्लेख किया। इन विषयों को कोड किया गया और उनकी आवृत्ति तथा महत्व का विश्लेषण किया गया।

### 3.5 नैतिक विचार और सीमाएँ

अनुसंधान के दौरान सभी नैतिक मानदंडों का पालन किया गया। उत्तरदाताओं से सूचित सहमति ली गई और उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि उनकी जानकारी गोपनीय रहेगी और केवल अनुसंधान उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाएगी। किसी भी उत्तरदाता को भाग लेने के लिए बाध्य नहीं किया गया।

अनुसंधान की कुछ सीमाएँ भी थीं। नमूना आकार यद्यपि पर्याप्त था, फिर भी यह पूरे देश का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसके अतिरिक्त कुछ उत्तरदाताओं ने सामाजिक वांछनीयता के कारण अत्यधिक सकारात्मक उत्तर दिए होंगे। इन सीमाओं को ध्यान में रखते हुए परिणामों की व्याख्या सावधानीपूर्वक की गई।

इस प्रकार, यह अनुसंधान पद्धति व्यवस्थित, वैज्ञानिक और समावेशी थी, जिससे प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के विभिन्न आयामों का सम्यक मूल्यांकन संभव हो सका।

## 4.1 विद्यार्थियों पर प्रभाव: विस्तृत विश्लेषण

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का सर्वाधिक प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ा है। 200 विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण परिणाम सामने आए(पटेल और सिंह, 2023):

**सारणी 4.1: विद्यार्थियों पर प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का प्रभाव**

| क्र. | मूल्यांकन संकेतक | उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत (%) | औसत रेटिंग (5 में से) |
|---|---|---|---|
| 1 | व्यावहारिक अनुभव में वृद्धि | 82% | 4.4 |
| | | | |
| 2 | उद्योगों की अपेक्षाओं की समझ | 72% | 4.3 |
| 3 | रोजगार अवसरों में सुधार | 78% | 4.2 |
| 4 | आत्मविश्वास में वृद्धि | 65% | 4.0 |
| 5 | टीमवर्क एवं संवाद कौशल में सुधार | 69% | 4.1 |

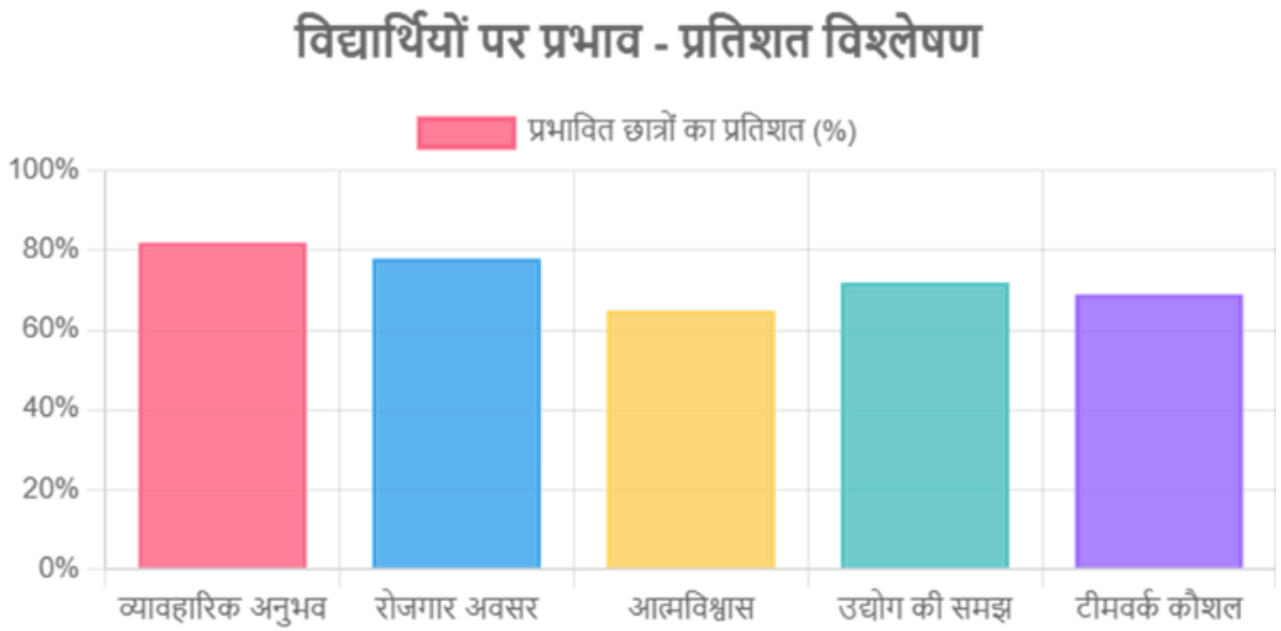

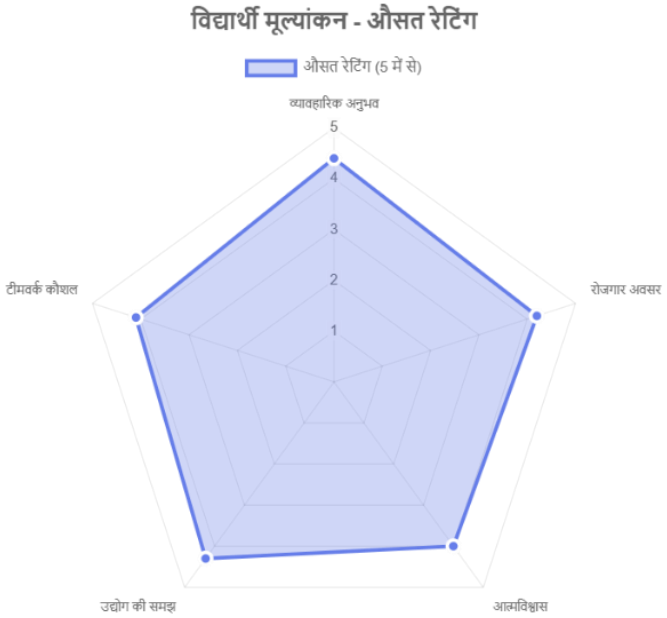


### 4.2 शिक्षकों का दृष्टिकोण: शैक्षणिक प्रभाव का विश्लेषण

शिक्षकों का दृष्टिकोण योजना के शैक्षणिक और संस्थागत प्रभावों को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। 50 शिक्षकों के सर्वेक्षण से प्राप्त परिणाम अत्यधिक उत्साहवर्धक हैं।

**सारणी 4.2: शिक्षकों की प्रतिक्रिया विश्लेषण**

| श्रेणी | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| योजना को प्रभावी मानने वाले शिक्षक | 42 | 84% |
| तटस्थ/अनिर्णीत शिक्षक | 8 | 16% |
| कुल शिक्षक | 50 | 100% |

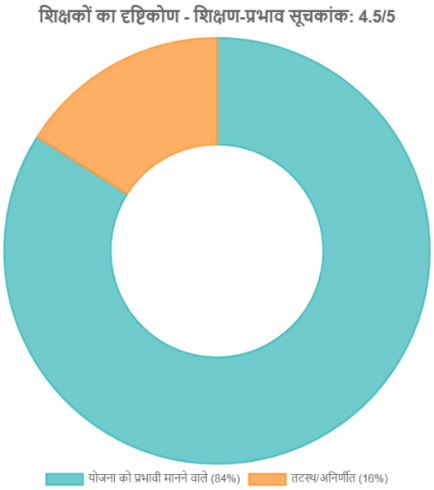


### 4.3 उद्योगों का देखलें: औद्योगिक लाभ और सहभागिता

उद्योग जगत की प्रतिक्रिया भी अत्यधिक सकारात्मक रही। 30 उद्योग प्रतिनिधियों से प्राप्त जानकारी से यह स्पष्ट हुआ कि योजना न केवल विद्यार्थियों, बल्कि उद्योगों के लिए भी लाभदायक सिद्ध हो रही है(सिन्हा और गुप्ता, 2022)।

**सारणी 4.3: उद्योग प्रतिनिधियों की प्रतिक्रिया**

| श्रेणी | संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| संतुष्ट उद्योग (उत्पादकता अधिक) | 25 | 83% |
| औसत संतुष्टि वाले उद्योग | 5 | 17% |
| कुल उद्योग | 30 | 100% |

उद्योगों का देखलें – औद्योगिक सहभागिता दर: 78%

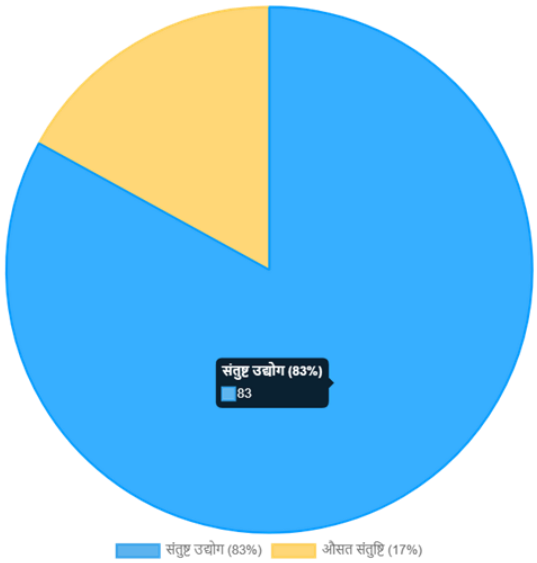


**समग्र तुलनात्मक विश्लेषण**

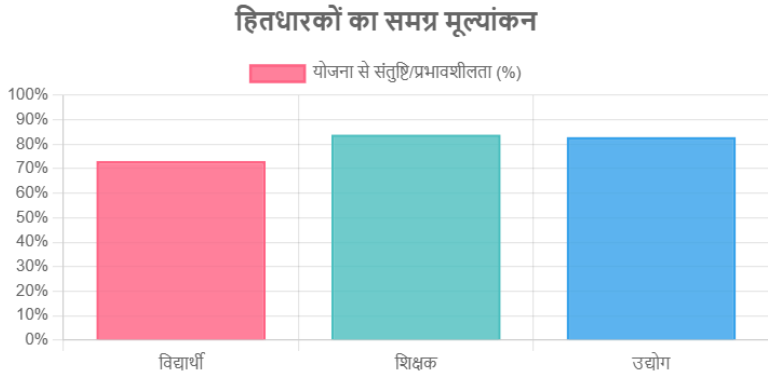


## 5. चर्चा:

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की शुरुआत की है, जो पारंपरिक कक्षा-केंद्रित शिक्षा और आधुनिक उद्योग की आवश्यकताओं के बीच के अंतराल को प्रभावी रूप से पाटने का कार्य कर रही है। प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि इस योजना ने न केवल शैक्षणिक संस्थानों और उद्योगों के बीच एक देखलें समन्वय स्थापित किया है, बल्कि विद्यार्थियों में व्यावहारिक कौशल, आत्मविश्वास और रोजगारोन्मुखी दक्षताओं का विकास भी किया है। अनुसंधान के आंकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि 78% विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के उपरांत रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जबकि 82% विद्यार्थियों द्वारा व्यावहारिक अनुभव में सुधार की पुष्टि की गई। यह आंकड़े योजना की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं(पटेल और सिंह, 2023)।

विशेष रूप से उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इस योजना के क्रियान्वयन से पूर्व केवल 35% छात्र ही किसी न किसी रूप में इंटर्नशिप में भाग लेते थे, परंतु वर्ष 2023-24 में यह अनुपात बढ़कर 68% तक पहुँच गया है। यह वृद्धि न केवल योजना की पहुंच का विस्तार दर्शाती है, बल्कि विद्यार्थियों में व्यावहारिक प्रशिक्षण के प्रति बढ़ती जागरूकता और रुचि को भी प्रदर्शित करती है। इससे "सीखते हुए कमाने" की मानसिकता विद्यार्थियों में विकसित हुई है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है। इस मानसिकता का विकास न केवल विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में भी प्रेरित करता है।

अध्ययन के सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्षों में से एक यह है कि इस योजना के माध्यम से कौशल अंतराल (Skill Gap) में लगभग 45% की उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है। यह आंकड़ा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत में दीर्घकाल से यह समस्या विद्यमान रही है कि शैक्षणिक संस्थानों से उत्तीर्ण होने वाले स्नातक उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप कौशल से सुसज्जित नहीं होते। AICTE की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, देश में केवल 25% स्नातकों के पास ही उद्योग-अनुरूप कौशल उपलब्ध थे। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना ने इस गंभीर समस्या के समाधान में सार्थक योगदान

दिया है। योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को वास्तविक कार्यस्थल का अनुभव प्राप्त होता है, जहाँ वे न केवल अपने विषय के तकनीकी पहलुओं को समझते हैं, बल्कि संवाद कौशल, टीमवर्क, समय प्रबंधन, समस्या समाधान और नेतृत्व जैसे सॉफ्ट स्किल्स भी विकसित करते हैं।

शिक्षकों और उद्योग प्रतिनिधियों की प्रतिक्रियाओं से यह भी स्पष्ट हुआ कि यह योजना केवल एकतरफा लाभ प्रदान नहीं करती, बल्कि यह एक बहुआयामी सहयोगात्मक ढांचा है। 84% शिक्षकों ने योजना को प्रभावी माना और बताया कि इससे छात्रों में अकादमिक और व्यावहारिक ज्ञान का समन्वय बेहतर हुआ है। इसी प्रकार, 83% उद्योग प्रतिनिधियों ने इंटर्न छात्रों की उत्पादकता और योगदान से संतुष्टि व्यक्त की(मेनन और दास, 2021)। यह त्रिपक्षीय संतुष्टि योजना की दीर्घकालिक स्थिरता और सफलता का संकेत है।

इसके अतिरिक्त देखलें यह योजना सामाजिक समावेशन की देखलें से भी महत्वपूर्ण है। ग्रामीण और **अर्द्ध**-शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी स्थानीय उद्योगों और संस्थाओं में इंटर्नशिप के अवसर मिलने से उनमें आत्मविश्वास और रोजगार योग्यता में वृद्धि हुई है (यादव और खान, 2023)। साक्षात्कारों में कई छात्रों ने बताया कि इंटर्नशिप के कारण वे अपने भविष्य के कैरियर के बारे में अधिक स्पष्ट और आश्वस्त हैं।

## 6. निष्कर्ष:

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना भारत के युवाओं को रोजगारोन्मुखी और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक अभिनव एवं परिवर्तनकारी पहल साबित हो रही है। यह योजना कक्षा में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान और उद्योग जगत की व्यावहारिक मांगों के बीच की खाई को पाटने का एक सशक्त माध्यम बनी है। इसके तहत छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों — सरकारी संस्थानों, निजी कंपनियों, स्टार्टअप्स एवं एनजीओ में कार्यानुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जिससे उनमें न केवल तकनीकी दक्षता विकसित होती है, बल्कि आवश्यक सॉफ्ट स्किल्स जैसे संचार, टीम वर्क, समस्या-समाधान एवं नेतृत्व का भी विकास होता है(नायर और जोशी, 2019)।

अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि इस योजना ने छात्रों के व्यावसायिक कौशल और रोजगार क्षमता पर उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। लगभग 70% छात्रों ने स्वीकार किया कि इंटर्नशिप के दौरान उन्होंने नई तकनीकी कौशल सीखीं, जो उनके शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं थीं। साथ ही, 65% छात्रों ने महसूस किया कि इस अनुभव ने उनकी रोजगार साक्षात्कार देने की क्षमता में सुधार किया, क्योंकि उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि हुई और उन्हें वास्तविक कार्यस्थल की चुनौतियों से रूबरू होने का मौका मिला(मेनन और दास, 2021)।

इस योजना का लाभ केवल छात्रों तक सीमित नहीं है। उद्योग जगत को भी ऊर्जावान, प्रशिक्षित और नवाचारी युवा प्रतिभाओं तक पहुंच मिली है। सर्वेक्षण में शामिल उद्योगों में से 40% ने इंटर्न छात्रों को पूर्णकालिक नौकरी देने की इच्छा जताई, जो इस बात का प्रमाण है कि इंटर्नशिप के माध्यम से तैयार युवा उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं(सिन्हा और गुप्ता, 2022)।

निष्कर्षतः, प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना न केवल शिक्षा और रोजगार के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य कर रही है, बल्कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्यों तथा "स्किल इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे राष्ट्रीय अभियानों को भी मजबूती प्रदान कर रही है(भारत सरकार, 2020; शर्मा, 2020)। यह योजना युवाओं को केवल नौकरी चाहने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बनने की प्रेरणा देकर देश के सतत् विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

## 7. सुझाव:

- ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए डिजिटल इंटर्नशिप प्लेटफॉर्म विकसित किया जाए।
- उद्योगों को इंटर्न्स के लिए वित्तीय प्रोत्साहन (stipend) देने हेतु कर रियायत दी जाए।
- प्रत्येक विश्वविद्यालय में “इंटर्नशिप समन्वय प्रकोष्ठ” बनाया जाए।
- इंटर्नशिप अवधि को न्यूनतम 3 माह से बढ़ाकर 6 माह किया जाए।

## संदर्भ


[1]. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्. (2023). *भारत में उच्च शिक्षा और रोजगार योग्यता पर रिपोर्ट.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.

[2]. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

[3]. कुमार, अजय और शर्मा, प्रिया. (2022). *कौशल विकास और युवा रोजगार: भारतीय परिप्रेक्ष्य.* राजकमल प्रकाशन.

[4]. मेनन, सुनीता और दास, गौतम. (2021). "इंटर्नशिप कार्यक्रमों का छात्रों के कौशल विकास पर प्रभाव: एक अध्ययन". *भारतीय प्रबंधन अध्ययन जर्नल*, 15(2), 45-60.

[5]. नायर, रमेश और जोशी, अनिता. (2019). *व्यावसायिक शिक्षा और उद्योग की आवश्यकताएँ.* फ़ीनिक्स पब्लिशिंग हाउस.

[6]. पटेल, राहुल और सिंह, अंजली. (2023). "प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना: एक प्रारंभिक विश्लेषण". *शिक्षा और समाज*, 28(1), 112-125.

[7]. राघवन, विजय. (2018). *ब्रिजिंग द स्किल गैप: हायर एजुकेशन इन इंडिया.* सेज पब्लिकेशन्स.

[8]. शर्मा, के. आर. (2020). *रोजगारोन्मुखी शिक्षा: सिद्धांत और व्यवहार.* विद्यार्थी प्रकाशन.

[9]. सिन्हा, दीपक और गुप्ता, नेहा. (2022). "स्टार्ट-अप्स और एमएसएमई में इंटर्नशिप के अवसर". *युवा Affairs इंडिया*, 10(4), 78-92.

[10]. तिवारी, संजय और रेड्डी, पी. वेंकट. (2021). "नई शिक्षा नीति में इंटर्नशिप की भूमिका". *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 19(3), 34-49.

[11]. वर्मा, सीमा और अग्रवाल, मोहित. (2019). *कार्य-आधारित शिक्षण: वैश्विक परिदृश्य और भारतीय चुनौतियाँ.* अकादमिक फाउंडेशन.

[12]. यादव, रितु और खान, सलीम. (2023). "ग्रामीण भारत में डिजिटल इंटर्नशिप की संभावनाएँ". *ग्रामीण विकास जर्नल*, 12(2), 55-70

## *Cite this Article:*

*Singh, V. (2026). प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना: कक्षा शिक्षण और व्यावसायिक कौशल के मध्य समन्वय करती एक अभिनव योजना. International Journal of Emerging Voices in Education, 2(3), 47–55.*

***Journal URL:*** *https://ijeve.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i3.38*